सबसे भीड़भरी जगह

(उनकी नज़र से, जो अब भी प्रतीक्षा करते हैं)

FERDINANDO FREGA

“चिकित्सालय मरीज़ों को ठीक करता है।
एक स्नेहमयी सामुदायिकता मनुष्यों को सँभालती है।”

I. सबसे भीड़भरी जगह

किसी चिकित्सा-संस्थान में सबसे भीड़भरी जगह कौन-सी है?

प्रवेश-कक्ष नहीं।

चिकित्सालय नहीं।

प्रतीक्षालय नहीं।

गलियारे भी नहीं।

सबसे भीड़भरी जगह वह है, जो किसी नक़्शे पर दिखाई नहीं देती।

वह है भविष्य।

जो भी भीतर आता है, अपने साथ एक प्रश्न लेकर आता है।

मरीज़।

परिवार।

चिकित्सक।

नर्सें।

निदेशक।

वह भी, जो फ़र्श साफ़ करता है।

सचमुच कोई नहीं जानता कि इसका अंत कैसे होगा — या शायद वे डर के मारे अनजान होने का बहाना करते हैं।

फिर भी, हर कोई अगले दिन की योजनाएँ बनाता रहता है।

और कहीं मैंने इतने सारे लोगों को एक ही वर्तमान में एक साथ जीते और एक ही भविष्य में हठ के साथ बसते नहीं देखा।

इसीलिए मेरा मानना है कि क़ब्रिस्तान सबसे भीड़भरी जगह है, जिसे मैंने कभी जाना।

II. उपसंहार

बहुत लोग सोचते हैं कि जीवन का विपरीत मृत्यु है।

मैं इतना निश्चित नहीं हूँ।

पुनर्वास-केंद्रों, अस्पतालों, देखभाल-गृहों और क़ब्रिस्तानों में समय बिताने के बाद, मैं एक अलग निष्कर्ष पर पहुँचा हूँ।

जीवन का विपरीत मृत्यु नहीं है।

वह विस्मृति है।

और शायद इसी कारण क़ब्रिस्तान उन जगहों में से एक है, जिन्हें मैं सबसे भीड़भरी जानता हूँ।

लोगों से नहीं।

स्मृति से।

अपने पूरे जीवन हम क़ब्रिस्तान से डरते हैं।

बचपन में हमें सिखाया जाता है कि यह अंत की जगह है।

बड़े होकर हम इससे बचना सीख जाते हैं।

हम वहाँ कर्तव्यवश जाते हैं, पुण्यतिथियों पर, आदर के कारण।

हम चुपचाप भीतर जाते हैं और जितनी जल्दी हो सके लौट आते हैं।

फिर भी, ग़ौर से देखने पर मैंने पाया कि क़ब्रिस्तान मृतकों की जगह नहीं है।

मृतक वहाँ नहीं हैं।

वे उन घरों में हैं, जिनमें वे रहते थे।

उन शब्दों में, जो वे छोड़ गए।

उन भाव-भंगिमाओं में, जो हमने उनसे सीखीं।

उन दोषों में, जो हमें विरासत में मिले।

उन अनुपस्थितियों में, जो हमसे बोलती रहती हैं।

क़ब्रिस्तान जीवितों की जगह है।

उनकी, जो लौटते हैं।

उनकी, जो स्मरण करते हैं।

उनकी, जिनके पास अब भी किसी से कुछ कहने को है, जो अब उत्तर नहीं दे सकता।

और मैं तुमसे कहता हूँ, उस व्यक्ति की ओर से जो वहाँ रहा, पर जिसे कोई जगह नहीं मिली।

III. लेखक-परिचय

यह रचना किसी के आदेश पर नहीं लिखी गई।

इसे बेचा नहीं गया।

इसे किसी व्यावसायिक उद्देश्य से नहीं बनाया गया।

इसे इसलिए लिखा गया ताकि पुनर्वास के मोल की, मानवीय गरिमा की, और मनुष्यों के आपसी रिश्ते की गवाही दी जा सके।

एकमात्र माँगा गया शुल्क एक प्रतीकात्मक डॉलर है — रचना के मूल्य के रूप में नहीं, बल्कि देखभाल, उम्मीद और ज़िम्मेदारी की संस्कृति के प्रति एक साझा प्रतिबद्धता की गवाही के रूप में।